अंतराक्षरी

कहानीमाला—40

रामायण और महाभारत

—इब्ने इंशा

रामायण और महाभारत

— इब्ने इंशा

रामायन

रामायन रामचन्द्रजी की कहानी है। ये राजा दसरथ के प्रिंस ऑफ वेल्स थे। लेकिन उनकी सौतेली माँ कैकेयी अपने बेटे भरत को राजा बनाना चाहती थी। उसके बहकाने पर राजा दसरथ ने रामचन्द्रजी को चौदह बरस के लिए घर से निकाल दिया। उनकी रानी सीता और उनके भाई लक्षमन भी साथ हो लिए। वनवास के लिए निकलते वक्त रामचन्द्रजी के पास कुछ न था, बस एक खड़ाऊँ थी; वह भी भरत ने रखवा ली, कि आपकी निशानी हमारे पास रहनी चाहिए। उस

खड़ाऊँ को वह तख़्त के पास, बल्कि ऊपर रखता था। ताकि रामचन्द्रजी का कोई आदमी चुराकर न ले जाय।

जंगल में रहने की वजह से उन्हें दिन गुज़ारने में चन्दां (थोड़ी भी) तक़लीफ न होती थी। रामजी तो आख़िर रामजी थे, ज़्यादा काम लक्षमन यानी बिरादरे—खुद (उनके भाई) किया करते थे।

ये लोग गिन—गिनकर दिन गुज़ार रहे थे कि कब चौदह वर्ष पूरे हों और कब ये वापस जाकर राजपाट सँभालें और रिआया की बेलौस ख़िदमत करें।

एक रोज जब कि राम और लक्षमन दोनों शिकार पर गये हुए थे, लंका का राजा रावन आया और सीताजी को उठाकर ले गया। इस पर रामचन्द्रजी और रावन में लड़ाई हुई। घमासान का रन पड़ा, जैसा

कि दशहरे के त्योहर में आपने देखा होगा।

हनुमानजी और उनके बन्दरों ने रामचन्द्रजी का साथ दिया और वे रावन और उसके राक्षसों को मारकर जीत गये। पुराने ख़्याल के हिन्दू इसीलिए बन्दरों की इतनी इज़्जत करते हैं और उनको इन्सानों पर तरजीह (प्रतिष्ठा) देते हैं।

महाभारत

महाभारत कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई की दास्तान है। कौरव तो जैसा कि नाम से ही ज़ाहिर है, बड़े कोर चश्म (अन्धे) थे। हाँ, पाण्डव अच्छे थे। इतना ज़रूर है कि कभी—कभी जुआ खेल लेते थे। जुए में बेईमानी कभी न करते थे और जीता हुआ माल कभी न छोड़ते थे। एक फिल्म 'महाभारत' के नाम से बन चुकी है। उसके डायरेक्टर,

ऐक्टर और ऐक्ट्रसों के नाम से हम वाक़िफ नहीं, लिहाज़ा इस बारे में ज़्यादा कुछ नहीं कह सकते।

महाभारत के ज़माने में शादी में ऐसी मुश्किलात न होती थीं जैसी आजकल होती हैं, कि लड़के का हसब व नसब,(नस्ल एवं वंश) जायदाद और तालीम वगैरह पूछते हैं। हत्ता के ज़रिया—ए-रोज़गार भी। पंजाबी, यू. पी. का सवाल भी उठता है और शिया-सुन्नी की देखा-परखी भी होती है। महाभारत के सुनहरे ज़माने में लोग स्वयंवर रचाते थे। जो भी शख़्स नीचे तेल के कुण्ड में अक्स पर नज़र जमाये ऊपर घूमती मछली की आँख में तीर का निशाना लगाता था उसके सर अपनी लड़की को मढ़ देते थे। द्रौपदी के स्वयंवर में अर्जुन ने तीर मारा था, जो घूमती मछली की आँख में सीधा लगा। यह

हुस्नोइत्तेफ़ाक था। वरना तो ऐसे करतब के लिए माहिर बाज़ीगर या नट होना ज़रुरी है। हम-आप नहीं लगा सकते।

कौरव और पाण्डवों में लड़ाई क्यों हुई थी? लड़ाई के लिए वजह का होना जरुरी नहीं । अब कुछ आँखों देखा हाल उस लड़ाई का सुनिये–

ख़वातीन व हज़रात (स्त्रियो और पुरुषो)! यह कुरुक्षेत्र का मैदान है, जो तहसील कन्हेल ज़िला करनाल में वाका है। लड़ाई अब शुरु होने वाली है। कौरव एक तरफ हैं, पाण्डव दूसरी तरफ़ हैं। यह होना भी चाहिए। उनके अलावा भी कुछ लोग मैदान में नज़र आ रहे हैं। ये द्रोनाचार्य हैं। दोनों फ़रीकों के बुज़ुर्ग हैं। अपना लश्कर कौरवों को दे रखा है, आशीर्वाद पाण्डवों को दे रखा है। पाण्डवों का मुतालबा

(इच्छा) था कि आशीर्वाद कौरवों को दे दें, लशकर हमें दे दें। लेकिन आचार्यजी नहीं माने।

ये कौन हैं?

ये कृष्नजी हैं। मशहूर अफ़साना निगार कृष्न (कहानीकार कृश्नचन्दर) नहीं! न महाशय कृष्न, बल्कि और साहब हैं ! कृष्न भगवान। अभी–अभी मक्खन खाकर मैदान में आ रहे हैं। मक्खन अभी तक होंठों पर लगा है। बैठे गीता लिख रहे हैं। अर्जुन को उपदेश दे रहे हैं। याद रहे कि कौरव और पाण्डव एक–दूसरे के कज़िन हैं।

ऐ लो... खाण्डे बजने लगा। रथ से रथ टकराने लगा। यह लड़ाई तो लम्बी चलती मालूम होती है, लिहाज़ा अब हम वापस स्टूडियो चलते हैं।

सवालात

1- अर्जुन ने घूमती मछली की आँख में तीर मारने के अलावा भी कभी कोई तीर मारा था?

2- भारत और पाकिस्तान की जंग, सितम्बर १९६५ ई. का द्रोनाचार्य कौन था?

3- ''कौरव और पाण्डव एक ही थैली के चट्टे-बट्टे थे'' इस मौज़ूँ पर जवाबे मज़मून लिखो? ज़्यादा से ज़्यादा दस अलफाज़ में हो जाना चाहिए।

पाकिस्तान

हद्दे अरबा : पाकिस्तान के मशरिक में सीटो है मग़रिब में सन्टों है, शुमाल[2] में ताशकन्द और जुनूब[3] में पानी। यानी जायेमफ़र[4] किसी तरफ़ नहीं है?

पाकिस्तान के दो हिस्से हैं—मशरिकी पाकिस्तान और मग़रिबी पाकिस्तान। ये एक-दूसरे से बड़े फासले पर हैं। कितने बड़े फासले पर, इसका अन्दाज़ा आज हो रहा है। दोनों का अपना—अपना हद्दे अरबा भी है।

मग़रिबी पाकिस्तान के शुमाल में पंजाब, जुनूब में सिन्ध, मशरिक

1- चौहद्दी 2- उत्तर 3- दक्षिण 4- भागने की जगह

में हिन्दुस्तान और मग़रिब में सरहद और बलूचिस्तान हैं। मियाँ! पाकिस्तान खुद कहाँ वाक़ा[1] है? और वाक़ा है भी कि नहीं; इस पर आजकल रिसर्च हो रही है।

मशरिकी पाकिस्तान के चारों तरफ आजकल मशरिकी पाकिस्तान ही है।

भारत

ये भारत है। गाँधीजी यहीं पैदा हुए थे। यहाँ उनकी बड़ी इज्ज़त होती थी। उनको महात्मा कहते थे। चुनांचे मारकर उनको यहीं दफन कर दिया और समाधि बना दी। दूसरे मुल्कों के बड़े लोग आते हैं तो इस पर फूल चढ़ाते हैं। अगर गाँधीजी न मारे जाते तो पूरे हिन्दुस्तान

1- स्थित

में अक़ीदतमन्दों (श्रद्धालुओं) के लिए फूल चढ़ाने के लिए कोई जगह न थी। यह मसला हमारे यानी पाकिस्तानवालों के लिए भी था। हमें कायदे आज़म[1] का ममनून[2] होना चाहिए कि खुद ही मर गये और सेफारती[3] नुमाइन्दों की फूल चढ़ाने की एक जगह पैदा कर दी। वरना शायद हमें भी उनको मारना ही पड़ता।

भारत का मुक़द्दस (पवित्र) जानवर गाय है। भारतीय उसी का दूध पीते हैं, उसी के गोबर से चौका लीपते हैं। लेकिन आदमी को भारत में मुक़द्दस जानवर नहीं गिना जाता।

1- जिन्ना साहब 2- कृतज्ञ 3- स्थित

एक ग़लतफहमी का इज़ाला[1]

इतिहासकारों की यह आदत है कि गलत बातें लिखते रहते हैं। एक बात यह लिख दी कि जहांगीर ने शेर अफ़गन को, जो नूरजहां का पहला शौहर था, मरवा दिया था, ताकि उससे शादी कर सके। ये ग़लत है। जहांगीर ने तो उसे बहुत मरने से रोका, लेकिन वह मर ही गया।

अकबर के अध्याय में भी हम इतिहासकार की एक गलत-बयानी की काट करना भूल गए थे। 'अकबरनामे' में लिखा है कि अकबर ने चितौड़ फतह किया तो तीस हज़ार आदमी तेग़ के घाट उतार दिये। यह सही नहीं है। अकबर हरगिज़ ऐसा सफ़्फ़ाक न था। मुल्ला अब्दुलकादिर बदायूनी ने मृतकों की तादाद आठ हज़ार और फरिश्ता

ने दस हज़ार लिखी है। उसी को सही जानना चाहिए।

सवालात

1- क्या कोई भी कबूतर उड़ा देती जहांगीर उससे शादी कर लेता?

2- जहांगीर अकबर के बाद क्यों तख्त पर बैठा? बल्कि तख्त पर बैठा ही क्यों?

ठगी उन्मूलन कैसे हुआ :

जिस जमाने का ज़िक्र है, उस ज़माने में ठगी बहुत हो गयी थी। ठग लोगों को राह चलते लूट लेते थे। आख़िर सरकार ने ठगी उन्मूलन विभाग कायम कर दिया। और यह कानून बनाया कि सब कार्यकर्त्ता

और कर्मचारी लूट के माल में हिस्सा वसूल किया करें।

लोगों की हिचकिचाहट दूर करने और हौसला बढ़ाने के लिए वाली ने खुद हिस्सा लेना शुरू कर दिया। ठगों ने जब देखा कि हमारे पास तो कुछ बचता ही नहीं, बल्कि पल्ले से भी देने की नौबत आ गई है तो ठगी से तौबा की और धीरे-धीरे उसका बिल्कुल उन्मूलन हो गया।

●

साथियो—

अंताक्षरी का ये अंक आपको कैसा लगा। अपने सुझाव जरूर भेजें।

आपके जवाब के इन्तजार में—
शिवसिंहनयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62 पहली मंज़िल सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली—29, दूरभाष : 6109327

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली—110092

ले मशाले चल पड़े

ले मशाले चल पड़े हैं लोग मेरे गाँव के,
अब अन्धेरा जीत लेंगे लोग मेरे गाँव के।
पूछती है झोपड़ी और पूछते हैं खेत भी,
कब तलक लुटते रहेंगे लोग मेरे गाँव के।
बिन लड़े कुछ भी यहां मिलता नहीं ये जानकर,
अब लड़ाई लड़ रहे हैं लोग मेरे गाँव के।
लाल सूरज अब उगेगा देश के हर गाँव में,
अब इकट्ठे हो चले हैं लोग मेरे गाँव के।
चीखती है हर रूकावट ठोकरों की मार से,
बेड़ियाँ खनका रहे हैं लोग मेरे गाँव के।
देखो यारो जो सुबह लगती थी फीकी आज तक,
लाल रंग उसमें भरेंगे लोग मेरे गाँव के।।